दैशिक शास्त्र (देश की रक्षा का शास्त्र ।)

(बद्रीसाह ठुलघरिया)

यद्यपि जग दु:ख दारुण नाना ।
सबतें कठिन जाति अपमाना ।।

दैवी सम्पद् योगक्षेम

अधिजनन

1. वंश में परम्परागत संस्कारों का उच्च होना।
2. दम्पतियों के जाति और वर्ण एक होना, किन्तु गौत्र और पिण्ड भिन्न होना।
3. दम्पतियों के गुणों में साम्य।
4. पिता का ब्रह्मचर्य और माता का पतिदैवत्व।
5. सन्तानोत्पादन केवल पूर्ण यौवन में ही होना।
6. गर्भाधान संस्कार।
7. दोहृदपूरण।
8. पुंसवन।
9. अनवलोभन ।
10. सीमन्तोन्नयन ।
11. गर्भभृति ।
12. जातकर्म ।
13. शैशव संस्कार ।

अध्यापन

अधिलवन

- बालब्रह्मचर्य
- वानप्रस्थप्रथा
- युद्ध

हमारे दैशिकाचार्यों ने युद्ध को रोककर शांति का प्रयास नहीं किया, वरन युद्ध को जातीय लवन कार्य में लाकर उससे अपनी पीढ़ियों को चिरंजीवी करने में लाभ उठाया। जातियों में युद्ध होना भगवती प्रकृति का सनातन नियम है। इस प्राकृतिक नियम को परिवर्तित कर अखण्ड शांति बनाए रखने की चेष्टा करना छद्म अथवा मूर्खता है; संसार में जितनी अशांति छद्म और कूटनीति से होती है, उसकी शतांश भी युद्ध से नहीं होती है। युद्ध जनित अशांति विद्युत्पात के समान क्षणभंगुर और एकदेशीय होती है; उसके पीछे परमहितकारी विराटुदयरूपी पर्जन्य बरसने लगता है। वहीं कूटनीति जनित अशांति अवर्षण के समान चिरस्थायिनी और सर्वव्यापिनी होती है; उसके पीछे महाअनर्थकारी दुर्भिक्ष उपस्थित होता है अर्थात् युद्ध जातीयलवन के काम में लाया गया, उसके द्वारा दुष्टों का नाश और साधुओं का परित्राण किया गया, ऐसे युद्ध के लिए जाति का चतुर्थांश अलग रख दिया गया। हमारे धर्मशास्त्र में ऐसा युद्ध धर्मयुद्ध कहा जाता है, इसी युद्ध के लिए गीता में कहा गया है कि -

'धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते:'

बालशिक्षा

1. सात्विक आहार।
2. अनामय ।
3. औपक्रमिक ब्रह्मचर्य।
4. प्रेमाचरण ।
5. क्रीड़ा।
6. बुद्धि उद्बोधन।
7. शीलोत्पादन।
8. आदर्श जनन।
9. औदार्य शिक्षा ।
10. गृहस्थ शिक्षा।
11. स्वाध्याय।

माध्यमिक

गुरूकुल में प्रवेश विद्यार्थी को अपने हृदय में वास देते थे।

चाणक्य विद्यापीठ

सामावर्तिक शिक्षा

नैष्ठिक तीर्थाटन

अर्थकरी शिक्षा गुरुकुल

स्त्री शिक्षा

पितामही विद्यापीठ और युवती तपोवन गुरुकुल

लोकमत परिष्कार

व्यास विद्यापीठ